* M B H - 1 6 0 7 0 3 0 1 0 2 0 9 0 0 - 5 0 - 2 *

MBH-16070301020900 Seat No. _____

B. R. S. (Sem. II) (CBCS) (W.E.F.-2016) Examination

March / April - 2018

Hindi : *Core-3*

(New Course)

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours] [Total Marks : **70**

सूचना : सभी प्रश्नों के उत्तर सूचनानुसार दीजिए ।

१ प्रेमचन्दजी के जीवन–कवन पर प्रकाश डालिए । १५

अथवा

१ कहानी कला के तत्त्वों के आधार पर 'अपना–अपना भाग्य' कहानी की समीक्षा कीजिए । १५

२ कहानी के उद्‌भव–विकास पर प्रकाश डालिए । १५

अथवा

२ 'सद्‌गति' कहानी का कथासार लिखकर उनके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए । १५

३ निम्नांकित में से किन्हीं **तीन** ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : १५

(१) ''सात वर्ष हो गये थे । गुलेरी की अभी कोख नहीं हरियायी थी । माँ कहती थी, अब मैं आठवाँ वर्ष नहीं लगने दूँगी । माँ ने पाँचसो रूपया देकर भीतर ही भीतर मानक कि दूसरे ब्याह की बात पक्की कर ली थी ।''

(२) ''अब बेनीबाबू घूमते–फिरते वहीं जा पहुँचे, जहाँ स्त्रियाँ छत कूट रही थी । एकाएक जो उन्होंने हैटधारी हम लोगों को देखा तो उनका गाना बन्द हो गया तब मेरे मन में आया कि इससे तो यही अच्छा था कि हम लोग यहाँ न आते ।''

(३) ''खाबिन्द ! तब तो कुछ शिकायत ही नहीं, इस कुसूर की तो यही सजा मुनासिब थी । मेरी बदगुमानी माफ फर्माइ जाय । मैं अल्लाह के नाम पर पड़ी कहती हूँ, मुझे इस बात का कुछ भी पता नहीं है ।''

(४) ''बच्चे पिछले हफ्ते लगभग फाके–से थे । चौधरी कभी गली से दो पैसे की चौराई खरीद लाते, कभी बाजरा उबाल सब लोग कटोरा–कटोरा भर पी लेते ।''

(५) ''गुरु का हृदय पिघला । उन्होंने दिल दहलाने वाली आवाज से, जो काफी धीमी थी, कहा, 'देख ! बारह वर्ष के भीतर तू वेद, संगीत, शास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, साहित्य, गणित आदि–आदि समस्त शास्त्र और कलाओं में पारंगत हो जावेगा । केवल भवन त्यागकर तुझे बाहर जाने की अनुज्ञा नहीं मिलेगी । ला, वह आसन । वहाँ बैठ ।' ''

४ ''दुखवा मैं कासे कहू मोरी सजनी'' कहानी का कथानक लिखिए । १५

अथवा

४ कहानी कला के तत्त्वों के आधार पर 'परदा' कहानी का मूल्यांकन कीजिए । १५

५ 'बू' कहानी का कथासार लिखिए । १०

अथवा

५ 'ब्रह्मराक्षस का शिष्य' कहानी का कथासार लिखिए । १०